

शैक्षिक प्रशासकों के निर्णय लेने के सामर्थ्य पर  
स्व-सम्मान एवम् मानवीय सम्बन्ध का प्रभाव

**PAPER APPEARED IN INDIAN JOURNAL OF EDUCATION RESEARCH VOL 20,  
NO.2, JULY-DECEMBER, 2001**

अशोक कुमार पाण्डेय  
राजेश कुमार पाण्डेय

डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय प्राचार्य, माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर, जयपुर।  
श्री राजेश कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ शिक्षक (अंग्रेजी), एच.विद्यालय, हाजीनगर (पं.ब.)

यह मत है कि निर्णय करना प्रशासन का हृदय है। साइमन (1960) ने इस विचार पर जेर दिया है। जब भी कोई कठिनाई या समस्या होती है तब निर्णय लेना पड़ता है। निर्णय और इसको लागू करना समस्या के समाधान की ओर ले जाता है अथवा समस्या के पुनः हल की ओर ले जाता है। संस्थाएँ निर्णय में प्रशासकों की विकृति या उनकी आन्तरिक भावनाओं की ओर इंगित करती हैं। निर्णय करना सामान्यतः चरम बिन्दु पर पहुँचने की प्रक्रिया है या इस प्रक्रिया से पहले होने वाली प्रक्रियाओं के साथ-साथ विकल्पों में एक चुना हुआ विकल्प देने की अन्तिम स्थिति है। डर्सी (1957) ने इस बात पर जोर दिया कि निर्णय किसी प्रकार की सूचना की प्राप्ति पर निर्भर करता है और दूसरों की सूचना देने के माध्यम से ही वांछित फलप्रद हो सकता है। टेलर (1965) का विचार था कि समस्या हल करना, निर्णय लेना और रचनात्मकता मूल रूप से एक ही तथ्य है। प्रत्येक में सोचने की भिन्नता है और एक ही तरह की अन्तर्दृष्टि प्रत्येक में निहित है।

बहुत से मनोवैज्ञानिक विश्वास करते हैं कि 'स्व' के दो पहलू हैं – संकल्पनाएँ और भावनाएँ और इसलिए स्व-संकल्पना और आत्म-सम्मान में अन्तर स्पष्ट करना, किसी व्यक्ति का अपने बारे में बोध या ज्ञान का पूर्ण गठन है। (कॉम्ब्स ईटी, ए.एल., 1971) अब विश्व में यह तथ्य स्वीकार कर लिया गया है कि किसी व्यक्ति का स्व-सम्मान, मूल्य या निर्णय जो वह स्वयं पर लागू करता है और उसका व्यवहार उसकी निर्णय लेने की सामर्थ्य पर प्रभाव रखते हैं। निर्णय-निर्धारण की सामर्थ्य के बहुत से पहलुओं को कहने और समझने के लिए व्यक्तियों के स्व-सम्मान के अध्ययन पर अब बहुत जोर दिया जाता है। स्व-सम्मान व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले तथ्यों में से एक माना जाता है।

(पाण्डेय, 1996) सफलताएँ और दूसरी सुखदायी घटनाएँ जीवन में स्व-सम्मान की वृद्धि करती हैं जबकि असफलता, तनाव और ऐसे ही अनुभव आत्म सम्मान को न्यूनता की ओर ले जाते हैं। मानवीय सम्बन्ध निर्णय लेने की सामर्थ्य पर अधिक प्रभाव रखता है। सामान्यतः लोग, जो कि प्रशासक के समीप होते हैं, प्रशासक द्वारा (उनके गलत कार्य करने पर) नकारात्मक निर्णय लिए जो पर निर्भीक रहते हैं। शैक्षिक प्रशासन मानव से सम्बन्धित प्रक्रिया है जहाँ प्रचार मानव-संसाधन से सम्बन्ध रखता है चाहे वे अध्यापक, अभिभावक या विद्यार्थी हैं। मानव सम्बन्ध का प्रभाव किसी निर्णय-निर्धारण की क्षमता के बारे में अच्छी तरह बतला सकता है।

उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य है –

1. निर्णय लेने की क्षमता, स्व-सम्मान और मानव-सम्बन्ध के मध्य सम्बन्ध की जाँच करना।
2. निर्णय-निर्धारण की सामर्थ्य पर लिंगीय प्रभाव की जाँच करना।

परिकल्पनाएँ

निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की गई –

1. स्व-सम्मान, मानव-सम्बन्ध और निर्णय निर्धारण के मध्य उच्च सह-सम्बन्ध होता है।
2. निर्णय-निर्धारण की कसौटी पर उच्च स्तर के माने गए पुरुष और स्त्री शैक्षिक प्रशासकों के मध्य विशेष अन्तर होता है।
3. स्व-सम्मान और मानव-सम्बन्ध के तथ्य जब साथ-साथ लिए जाते हैं तो वे निर्णय-निर्धारण के बारे में अच्छी भविष्यवाणी करते हैं।

विधि

न्यादर्श : न्यादर्श के अन्तर्गत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली से सम्बद्ध सीनियर सैकण्डरी विद्यालयों के 100 प्राचार्यों को सम्मिलित किया गया। विद्यालयों को विषम न्यादर्श बनाने के लिये बिना सोचे समझे चुना गया, जिसके अन्तर्गत सामान्य रूप से

विद्यालयों में पायी जाने वाली योग्यता एवम् विस्तार हो। ऐसे विद्यालय कलकत्ता और जयपुर से थे।

उपयोग में लिये गए परीक्षण

अध्ययन के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का उपयोग किया गया –

1. डॉ. ए.के. पाण्डेय (1995) द्वारा लिखित एवम् मानकीकृत निर्णय-निर्धारण क्षमता अनवेषिका (कडब)। इससे प्राचार्यों की निर्णय-निर्धारक क्षमता का मापन किया जाता है।
2. डॉ. ए.के. पाण्डेय (1997) द्वारा लिखित एवम् मानकीकृत स्व-सम्मान मापन प्रश्नावली (स्डफ)। यह शैक्षिक-प्रशासकों के स्व-सम्मान का मापन करती है। परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक .79 है और प्रामाणिकता गुणांक .87 है।
3. मानव सम्बन्ध अनवेषिका डॉ.ए. के. पाण्डेय द्वारा 1998 ई में तैयार एवं मानकीकृत की गई। इससे मानव-सम्बन्धों का मापन शैक्षिक व्यवस्था में मुख्य रूप से किया जाता है। परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक .87 है और इसका प्रामाणिकता गुणांक .93 है।

प्रक्रिया

न्यादर्श में सम्मिलित सभी व्यक्तियों से मिला गया और उनसे डी.एम.सी.आई., एस.ई.एम.क्यू. और एच.आर.आई. परीक्षणों को पूर्ण करने का निवेदन किया गया। सम्बन्धित नियमावली में दिया गए दिशा निर्देशों के अनुसार उत्तर प्रपत्रों को एकत्रित किया गया। जिनसे प्राप्त स्कोरों को मानक-स्कोरों में, आंकड़ों की समीक्षा के लिए बदला गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

1. निर्णय लेने की क्षमता, स्व-सम्मान प्राप्तांकों और मानवीय-सम्बन्ध प्राप्तांकों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने को सह-सम्बन्ध गुणांक की सार्थकता का आकलन किया गया।
2. टी-परीक्षण यह दर्शाने हेतु किया गया-कि क्या लिंगीय भिन्नता निर्णय लेने की क्षमता में विशेष प्रभाव डालती है।
3. शैक्षिक प्रशासन में आवश्यक निर्णय लेने की क्षमता की गुणवत्ता का पूर्वांकन करने वाले चरों के सर्वोत्तम समुच्चय की पहचान के लिए बहुकारकीय प्रतिगमन किया गया।

परिणाम

आँकड़ों के विश्लेषण ने निर्णय लेने की क्षमता, स्व-सम्मान और मानवीय सम्बन्धों के मध्य उच्च सह-सम्बन्ध दर्शाया (तालिका-1) है।

तालिका - 1

चरों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध

क्र.सं.	चर	ॠ	ॡ	ॢ
01.	निर्णय लेना	1.00	—	—
02.	स्व-सम्मान	.74	1.00	—
03.	मानव -सम्बन्ध	.83	.79	1.00

क्रमागत बहुकारकीय प्रतिगमन गुणांक टू लिटिल विधि द्वारा निकाला गया। आर .63 पाया गया जो ककि .01 स्तर पर सार्थक था। आर .63 अर्थ निर्णय लेने के आंकड़े से है जो कि स्व-सम्मान और मानवीय सम्बन्ध से प्राप्त आंकड़ों से सम्बन्धित बहुकारकीय प्रतिगमन समीकरण से पूर्वभाषित किया जाता है। मान ने दर्शाया कि निर्णय लेने की क्षमता (तालिका -2) में लिंगीय भिन्नता का विशेष प्रभाव पड़ता है।

तालिका -2

पुरुष और स्त्री शैक्षिक प्रशासको की सुचारुता

वर्ग जिनकी तुलना की गई	औसत	प्रमाणिक विचलन	औसत में अन्तर	ॠ	डी.एफ.	टी	महत्व का स्तर
पुरुष	181.36	3.42	—	—	—	—	—
			5.24	3.23	98	1.37	ॡ०१
स्त्री	176.12	2.41					

.01 स्तर पर सार्थक (डीए 98 पी ॡ०१)

विवचेन

निष्कर्ष दर्शाते हैं कि व्यक्तियों की निर्णय-निर्धारण की योग्यता उनके स्व-सम्मान एवं मानव सम्बन्ध से प्रभावित होती है।

त दर्शाता है कि निर्णय निर्धारण स्व सम्मान और मानव सम्बन्ध तत्वों जैसे चरों से पूर्वभाषित किया जा सकता है। यह पहले ही व्यक्त किया जा चुका है कि उपर्युक्त चरों ने निर्णय निर्धारण की अच्छी भविष्यवाणी में सहायता की। तत्र 63 का अर्थ है कि निर्णय-निर्धारण में अधिकांश सम्भव स्कोर जिसको कि 100 व्यक्तियों में से प्रत्येक प्राप्त करेगा बहुकारकीय प्रतिगमन समीकरण से पूर्वभाषित किया जा सकता है, 100 व्यक्तियों के पूर्वभाषित और प्राप्त स्कोरों के मध्य सह-सम्बन्ध .63 होगा। त उस सीमा को दर्शाता है जिस सीमा तक भविष्य वक्ताओं के मिले-जुले प्रयास द्वारा निर्णय निर्धारण का स्तर मापन निश्चित किया जाता है।

यह दर्शाता है कि बहुकारकीय प्रतिगमन समीकरण के रूप में भविष्य वक्ताओं का सूत्र निर्णय-निर्धारण में उपलब्धि को पहले से ही दर्शाने वाला है।

इस अध्ययन में पाया गया है कि पुरुष शैक्षिक – प्रशासक निर्णय-निर्धारण में स्त्री शैक्षिक प्रशासकों से अच्छे हैं। यह खोज हमें इस निष्कर्ष तक ले जाती है कि स्व-सम्मान और मानव – सम्बन्ध चर उच्च और निम्न स्कोर निर्णय-निर्धारण की मुख्य कसौटी हैं।

## **ABSTRACT**

Decision making, collecting information and planning are major functions of administrators. Out of all these decision making is most important. The interrelationship of these is studied and it is concluded that without information decision making is difficult if not impossible. Decision is a judgement among many well considered alternatives. Decisions are subjective and vary from situation to situation. Self respect is an idea of an individual about himself that affects human relations directly.

The present research paper is concerned with effect of self respect and human relations on decision making ability of educational administrators.

The Sample consists of 100 Central School Board principals of +2 level schools of Jaipur and Calcutta. The result shows decision making ability closely related with self respect and human relations.

## सन्दर्भ

1. हर्बट ए. साइमन, द न्यू साइंस ऑव्, मैनेजमेन्ट डिसेसिओ न्यूयार्क, हार्पर एण्ड रो, 1960, पीपी2-4
2. टी.डीसी जूनियर, ए कम्यूनिकेशन मॉडल फॉर एडमिनिस्ट्रेशन, एडमिनिस्ट्रेटिव साइंस क्वार्टरली, दिसम्बर, 1957, - 309
3. टेलर, डी.उब्ल्यू., डिसेजन मेकिंग एण्ड प्रॉब्लेम सॉल्विंग, इन जे.जी. मार्क, ए. हैंडबुक ऑव ऑर्गेनाइजेशनस, शिकागो : रैन्ड मैकनली 1965 पीपी 48-82
4. कॉम्ब्स, ए. डब्ल्यू, एविला, डी.ए. एण्ड पर्के, उब्ल्यू ई. हेल्पिंग रिलेशनशिप बेसिक कॉन्सेप्टस फॉर द हैल्पिंग प्रोफेशनस बेस्टॅश : एलिन एण्ड बेरून, 1971
5. पाण्डेय, एं.के. सेल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड डाइवरजेन्ट थिंकिंग पेपर प्रेजेण्टेड एट इन्स्टीट्यूट ऑव एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेटर्स, कलकत्ता, जून 26-30, 1996